International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 31-32

भारत एवं उत्तर प्रदेश के राजनितिक परिपेक्ष में महिलाओं की स्थिति की विवेचना

प्रशांत कुमार

शोध छात्र राजनीती विज्ञान विभाग मोनाड यूनिवर्सिटी, हापुड, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्राचीन काल से आधुनिक काल यानि वर्तमान समय तक भारत में स्त्रियों की स्थिति परिवर्तनशील रही है| हमारा समाज प्राचीन काल से आज तक पुरुष प्रधान ही रहा है | विश्व का इतिहास और विश्व के प्रगतिशील देशों की राजनीति, सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति इस बात का प्रमाण है कि किसी भी देश की वांछित प्रगति के लिए उस देश की महिलाओं की भागीदारी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा द्वारा घोषित ''अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष'' एवं ''महिला दशक 1990-2000'' की समाप्ति तक भी भारत की सम्पूर्ण कार्यात्मक शक्ति में महिला कार्यकर्ताओं की संख्या कम है। विश्व की आधी शक्ति एवं क्षमता होने के बावजूद राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका, उनकी कम भागीदारी तथा कमजोर स्थिति और सहभागिता पर प्रश्नचिन्ह यथावत लगा हुआ है। भारतीय राजनीति में महिलाओं के लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न होने के बावजूद भी वे भारत के आम चुनावों में बहुत कम संख्या में भाग लेती हैं तथा जो भाग लेती हैं वे प्रायः राजनीति की ऊँची कुर्सी तक पहुँचने अथवा उसे प्राप्त करने में असमर्थ रहती हैं।

मूलशब्दः समाज, पुरुष, महिला, भारत, राजनीति

प्रस्तावना

विश्व का इतिहास और विश्व के प्रगतिशील देशों की राजनीति, सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति इस बात का प्रमाण है कि किसी भी देश की वांछित प्रगति के लिए उस देश की महिलाओं की भागीदारी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा द्वारा घोषित ''अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष'' एवं ''महिला दशक 1990. 2000'' की समाप्ति तक भी भारत की सम्पूर्ण कार्यात्मक शक्ति में महिला कार्यकर्ताओं की संख्या कम है। विश्व की आधी शक्ति एवं क्षमता होने के बावजूद राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका, उनकी कम भागीदारी तथा कमजोर स्थिति और सहभागिता पर प्रश्नचिन्ह यथावत लगा हुआ है। भारतीय राजनीति में महिलाओं के लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न होने के बावजूद भी वे भारत के आम चुनावों में बहुत कम संख्या में भाग लेती हैं तथा जो भाग लेती हैं वे प्रायः राजनीति की ऊँची कुर्सी तक पहुँचने अथवा उसे प्राप्त करने में असमर्थ रहती हैं।

भारतीय राजनीति में महिला की भागीदारी

भारतीय राजनीति में आजादी के इतने वर्षों बाद भी महिला की भागीदारी बहुत कम बनी हुई है। कई दशकों बाद भी महिला को अभी तक लोकसभा व विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का इन्तजार है । यह भी एक तथ्य है कि महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के बिल को रखने के दौरान सदन में किस तरह के व्यवहार व दुव्यवहार की घटनाएं सामने आती हैं। कभी तो बिल सदन में रखने के साथ ही फाड़ दिया जाता है, तो कभी पास नहीं करने के नए-नए तरीके समझाए जाते हैं। देश के प्रमुख राजनीतिक दल भाजपा व कांग्रेस ने पार्टी के संगठन में महिलाओं को 33प्रतिशत आरक्षण देने का प्रस्ताव पास कर रखा है लेकिन इस नियम का ईमानदारी से पालन नहीं हो पाता। फौरी तौर पर घोषणाएँ कर दी जाती हैं लेकिन यथार्थ के धरातल पर उन्हें अमलीजामा नहीं पहनाया जाता। यह भी एक कड़वा सच है कि वे महिलाएं ही राज्य में मुख्यमंत्री बन पाई हैं, जिनकी पार्टी उनके जेबी संगठन या उनके दारोमदार पर चलती हैं। 28 राज्यों वाले देश में वर्तमान समय में कांग्रेस पार्टी से सिर्फ एक दिल्ली में शीला दीक्षित मुख्यमंत्री बनी हुई है जबकि भाजपा से तो वर्तमान समय में एक भी महिला मुख्यमंत्री नहीं है । भाजपा की स्थापना सन् 1981 से लेकर अब तक सिर्फ तीन राज्यों में ही महिला मुख्यमंत्री रही है एव जिसमें से मध्यप्रदेश की मुख्यमंत्री उमा भारती को तो बीच सत्र में ही हटना पड़ा था। राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे जरूर पांच साल राज्य की मुख्यमंत्री रही। जबकि अपने दम पर पार्टी चलाने वाली उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती तीन बार, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एक बार और तमिलनाडू की मुख्यमंत्री जयललिता ने अपने दम पर सरकार चलाई है । देश के प्रथम आम चुनाव 1952 से लेकर अभी तक सिर्फ 14 महिलाओं को ही मुख्यमंत्री बनने का गौरव हासिल हुआ है। भारत में पहली बार अक्टूबर, 1963 में सुचेता कृपलानी को देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया गया। इसके बाद नन्दनी सतपते को कांग्रेस ने उड़ीसा का मुख्यमंत्री बनाया। वे उड़ीसा की पहली और अभी तक की आखरी महिला मुख्यमंत्री के रूप में जानी जाती है । गोवा में अगस्त, 1973 में शशिकला को अपने पिता दयानन्द की आकस्मिक मृत्यु के बाद मुख्यमंत्री का ताज सौंपा गया। इसके बाद फिर कभी वे मुख्यमंत्री नहीं बन पाई। आसाम में कांग्रेस पार्टी ने दिसम्बर, 1980 में सैयद अनवर तैमूर को मुख्यमंत्री बनायाएलेकिन वे करीब छह महीने ही मुख्यमंत्री रहे। तमिलनाडू के मुख्यमंत्री एम.जी. रामचन्द्रन की मृत्यु के बाद ए.आई.डी.एम.के. ने उनकी पत्नी जानकी रामचन्द्रन को मुख्यमंत्री बनाया लेकिन वे 7 जनवरी, 1988 से 30 जनवरी 1988 तक ही मुख्यमंत्री रह सकीं । बाद के दौर में ए.आई.डी.एम.के. को मजबूत कर जयललिता (1991, 1966, 14 मई 2001, 16 सितम्बर, 2001, 2002, 2006 और 2011 से निरन्तर) ने तमिलनाडू में सरकार बनाईं। हालांकि, जयललिता का शासन विवादों की छाया से मुक्त नहीं हो पाया, उन पर कई तरह के आरोप लगते रहे।

उत्तर प्रदेश राजनीति में महिला

उत्तर प्रदेश की राजनीति में महिलाओं का रूतबा बढ़ रहा है। उत्तर प्रदेश की महिला राजनीतिज्ञों की चर्चा करें तो बसपा मुखिया मायावती सबसे ताकतवर नेता हैं। वह तीन बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकी हैं और इस समय उनकी पार्टी उत्तर प्रदेश की मुख्य विपक्षी पार्टी भी है। इस समय उत्तर प्रदेश की राजनीति में मायावती, व केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी और प्रियंका गांधी के इर्द गिर्द घूम रही है । इन तीनों महिलाओं को अपनी

अपनी पार्टी की तरफ से मुख्यमंत्री पद के दावेदार के रूप में देखा जा रहा है।

राज्य की 80 लोकसभा सीटों में से 13 महिला सदस्य हैं। राज्यसभा में महिला सदस्यों की संख्या चार है। कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी उत्तर प्रदेश से लोकसभा की सदस्य हैं तो फिल्मी दुनिया की दो बड़ी कलाकार हेमामालिनी और जया बच्चन उत्तर प्रदेश से सांसद हैं। हेमामालिनी मथुरा से भाजपा सांसद हैं तो जयाप्रदा सपा से राज्यसभा में हैं। बसपा मुखिया मायावती तीन बार मुख्यमंत्री रहीं वह भी उत्तर प्रदेश से ही राज्यसभा में हैं। मायावती उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि देश की पहली दलित महिला मुख्यमंत्री हैं। मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमाभारती भी उत्तर प्रदेश की झांसी सीट से लोकसभा की सदस्य हैं। केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी वैसे तो गुजरात से राज्यसभा सदस्य हैं लेकिन यूपी की अमेठी से चुनाव लड़ने के बाद उत्तर प्रदेश की राजनीति में ज्यादा सक्रिय हैं।उत्तर प्रदेश से उमा भारती मेनका गांधी और साध्वी निरंजन ज्योति केन्द्र सरकार में मंत्री हैं। मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी डिम्पल यादव लोकसभा की सदस्य हैं। लोकसभा में प्रियंका रावत, साध्वी ज्योतिबा बाई फुले, रेखा, नीलम और अनुप्रिया पटेल, अंजू बाला और कृष्णा राय भाजपा की सदस्य हैं। कनकलता और फात्मा ताजीन सपा की तरफ से राज्यसभा में हैं। देश की सबसे बड़ी विधानसभा मे 32 महिलाएं विधायक हैं। वैसे देखा जाय तो प्रतिशत के आधार पर 403 सदस्यीय विधानसभा में यह संख्या कम है। उत्तर प्रदेश में अरूण कुमार कोरी और सैयदा शादाब मंत्री है।

इसी तरह 13 जून 1995 को मायावती ने भाजपा के समर्थन से पहली बार उत्तर प्रदेश में सरकार बनाई और देश की पहली दलित मुख्यमंत्री बनने का गौरव हासिल किया। इसके बाद वे (21 मार्च 1997, 12 सितम्बर 1997, 2002, 2003 और 2007 से लेकर 2012 तक) उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं। देश के प्रख्यात राजनीतिक चिंतक एवं पत्रकार रामबहादुर राय ने मायावती के नेतृत्व में बसपा सरकार के पाँच वर्ष पूरे होने पर लिखा - बसपा की मायावती सरकार से उत्तर प्रदेश को स्थिर शासन मिला क्योंकि 2007 के विधानसभा चुनाव में 16 साल बाद एक दल को विधानसभा में स्पष्ट बहुमत मिला था।

अन्य प्रदेशों की राजनीति में महिला

8 कांगे्रस पार्टी ने अप्रैल, 1996 से फरवरी, 1997 तक राजेन्द्र कौर भट्टल को पंजाब का मुख्यमंत्री बनाया। पंजाब के अब तक के इतिहास में वे इस सूबे की एक मात्र महिला मुख्यमंत्री के रूप में पहचान रखती हैं। इधर, बिहार के मुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के चारा घोटाले में फंसने और भ्रष्टाचार में धंसने के आरोप के चलते उन्होंने मुख्यमंत्री का पद अपनी पत्नी राबड़ी देवी को सौंपा। राबड़ी देवी को (1997, 1999, 1999, 2000, और 2000, 2005) बिहार का तीन बार मुख्यमंत्री बनने का गौरव हासिल हुआ। भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली में मदनलाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा के आपसी विवाद के चलते सुषमा स्वराज को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया लेकिन कुछ महीने बाद ही दिल्ली विधानसभा के चुनाव में भाजपा की करारी हार हो गई। भाजपा का बहुमत नहीं आया इस कारण सुषमा स्वराज को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा। 1998 में कांग्रेस की शीला दीक्षित को दिल्ली के मुख्यमंत्री की गद्दी मिली तब से लगातार दिल्ली की मुख्यमंत्री बनी हुई हैं। मध्यप्रदेश में उमा भारती 2003. 04 तक भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री रहीं। राजस्थान में वसुन्धरा राजे 2003. 2008 और पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी में वामपंथियों की 34 साल पुरानी सरकार को हटाकर अपना झण्ड़ा फहरा दिया। लोकसभा में 60 और राज्यसभा में 24 महिला सांसद जनता के प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

इसी तरह संविधान के 73 वें तथा 74 वें संविधान संशोधन द्वारा महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिया गया तथा लगभग 15 लाख महिलाओं को ग्राम पंचायतों तथा शहरी निकायों के चुनावों में भागीदारी का अवसर प्रदान किया। इसके फलस्वरूप देश के विभिन्न राज्यों में 43प्रतिशत तक महिला प्रतिनिधि चुनकर सशक्तिकरण के मार्ग की ओर अग्रसर हुई। इस समय देशभर में कुल पंचायतों के लगभग 28 लाख, 10 हजार प्रतिनिधि हैं, जिनमें से लगभग 36 प्रतिशत महिलाएं हैं। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने 4 जून, 2009 को संसद के संयुक्त अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए घोषणा की थी कि 'पंचायतों में महिलाओं के आरक्षण की सीमा 50प्रतिशत तक करने के लिए संवैधानिक संशोधन किया जाएगा।' संविधान के अनुच्छेद 243; डी) के तहत यह संशोधन होगा। सम्पूर्ण देश में 50 प्रतिशत आरक्षण लागू होने के बाद पंचायतीराज में महिलाओं की भागीदारी बढ़कर 14 लाख होने का अनुमान है।

सन्दर्भ सूची

1. भारत की जनगणना, 2011 ।
2. चन्देल धर्मवीर, मानवाधिकार, नेहरू और अम्बेडकर, पोइन्टर पब्लिशर्स, वर्ष 2011 पृष्ठ 23 ।
3. जैन, एस. जैकेयूट (स), वूमेन इन पालिटिक्स, ए. ओ. विले, इन्टर साइन्स पब्लिकेशन, न्यूयार्क, जोन विले एण्ड सन्स, 1974 पृष्ठ 5.6 ।
4. मिश्र, एस.एन., जुलाई-दिसम्बर 2011, पृष्ठ 157 ।
5. चन्देल धर्मवीर, चतुर्वेदी नत्थीलाल, भारत में पंचायतीराज सिद्धान्त एवं व्यवहार, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, सन् 2012, पृष्ठ 183 ।
6. गुप्ता कमलेश कुमार, महिला सशक्तिकरण, बुक एनक्लेव, जयपुर।
7. सिंह करण बहादुर, महिला अधिकार व सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मार्च, 2006 ।
8. सुरेश लाल श्रीवास्तव, राष्ट्रीय महिला आयोग, कुरूक्षेत्रए मार्च, 2007
9. गौतम हरेन्द्र राज, महिला अधिकार संरक्षण, कुरूक्षेत्र मार्च, 2006 ।
10. व्यास, जय प्रकाश, नारी शोषण, ज्ञानदा प्रकाशन, 2003 ।
11. शैलजा नागेन्द्र, वोमेन्स राइट्स, डी वी पब्लिशर्स जयपुर, 2006 ।